पद ६९

(राग: तोडी - ताल: त्रिताल)

तो सविता मी ध्यातो। जो का सकल जीव जगमितसी प्रेरक हा।।धु.।। प्रणवस्वरूप सतज्ञान नित्य हा जो करी स्थिति लय घन निजसुख तमहर अति तेजस्वी स्वरूप गायत्री स्तवित गुरुमाणिक हा।।१।।